

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 3, March 2015

बढ़ती भौतिकता, घटते मानवीय मूल्य

डॉ. सरोज

एसोशिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, का. सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या

सारांश

आज के वैज्ञानिक युग में उपभोक्तावादी संस्कृति बढ़ रही हैं। अब पुराने रहन सहन धार्मिक आध्यात्मिक जीवन एवं सात्विक आचरण को पुराणपंथी तथा ढोंग बताया जाता है। भौतिकतावादी प्रवृत्ति उत्तरोत्तर बढ़ने से अब मौज मस्ती एशो आराम फैशनपरस्ती एवं अंधानुकरण को जिन्दगी का सर्वश्रेष्ठ पक्ष माना जा रहा है। यह भौतिकतावादी संस्कृति कुछ तो पाश्चात्य देशों से आयतित है तथा कुछ नई सभ्यता की होड़ा होड़ी से चल रही है। इस भौतिकतावादी प्रवृत्ति के कारण सामाजिक जीवन वितृष्णा से आक्रान्त हो रहा है, साथ ही मानवीय मूल्यों का पतन व हास भी हो रहा है। भौतिकतावादी प्रवृत्ति वस्तुतः चार्वाक मत का नया रूप है। आज हर आदमी अपनी जेब का वजन न देखकर मोबाइल, टेलीफोन, टेलीविजन, फ्रिज, कूलर, कार आदि भौतिक साधनों की जुगाड़ में लगा रहता है। बैंकों से अथवा उत्पादक कम्पनियों से ऋण लेकर व्यक्ति इनकी पूर्ति कर लेता है, परन्तु वह ऋण चुकाने के चक्कर में वह कितना परेशान रहता है यह हर कोई जानता है। फैशन के अनुसार कपड़े पहनना, जूते पहनना, सिगरेट, शराब पान आदि का सेवन करना, कोल्ड ड्रिंक एवं मिनरल वाटर का अभ्यस्त बनाना, क्लब व किटी पार्टी को अपनी इज्जत का प्रतीक मानना तथा भौतिक सुविधाओं को जिन्दगी का सच्चा सुख बताना आज मुख्य सिद्धांत बन गया है। इस तरह निम्न मध्यम वर्ग से लेकर उच्च वर्ग तक भौतिकता का व्यामोह फैल रहा है।

परिचय

भौतिकता की प्रवृत्ति के कारण सर्वाधिक हानि मानवीय मूल्यों की हुई है। अब राह चलती महिलाओं से छीना झपटी करना, भाई बन्धुओं की सम्पत्ति हड़पने का प्रयास करना, बलात्कार, धोखाघड़ी, मक्कारी, सहानुभूति संवेदना न रखना, अस्व्याचरण, दूध घी आदि में मिलावट करना, प्रबल स्वार्थी भावना रखना आदि अनेक बुराइयों से सामाजिक सम्बन्ध तार तार हो रहे हैं। इसी प्रकार आज सभी पुराने आदर्शों एवं मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा है। आज भौतिकतावाद का युग है। भौतिकता की चकाचौंध में मानव इतना विमुग्ध हो रहा है कि वह मानवीय अस्मिता को भूल रहा है। इस कारण सामाजिक जीवन पर कुप्रभाव पड़ रहा है। और मानव मूल्यों एवं आदर्शों का लगातार हास हो रहा है। यह स्थिति मानव सभ्यता के लिए चिंतनीय है। समृद्धि और उदारता का मेल बहुत कम देखने में आता है। जहाँ कहीं भौतिक चकाचौंध और भौतिक संपदा प्रधान होती है वहाँ आमतौर पर संवेदनशीलता और आत्मीयता के भाव गौण होते चले जाते हैं और एक स्थिति यह आती है कि दुनिया के सभी प्रकार के रिश्ते व्यावसायिक मनोवृत्ति से घिर जाते हैं जो कालान्तर में कभी भी संवेदनशीलता और मानवीय धरातल को प्राप्त नहीं कर पाते बल्कि वन वे टॉफिक की तरह एक ही दिशा में बढ़ते चले जाते हैं- स्वार्थ और ऐषणा पूत्रित की ओर। धंधेबाजी मानसिकता जहाँ कहीं होगी वहाँ सार्वजनीन कल्याण, मानवीय मूल्यों और उदार प्रवृत्तियों का कहीं कोई स्थान नहीं होता। आजकल समुदाय और सभी जगह कमोबेश हालत यही है। व्यवसायी बुद्धि का भयंकर प्रकोप कहेँ या प्रभाव, निरन्तर बढ़ता जा रहा है और ऐसे में सेवा, परोपकार तथा सामुदायिक संसाधनों की बलि चढ़ती जा रही है। जड़ और भौतिक संसाधनों को ही यश और प्रतिष्ठा का पैमाना मान चुके लोगों के लिए जीवनालोक से कहीं ज्यादा पद और पैसे तथा संसाधनों के लिए जिन्दगी होम देना हो गया है और यही कारण है कि आदमी के भीतर से आत्मीयता, संवेदना, सेवा व परोपकार के भावों को खात्मा होता जा रहा है और उनकी जगह ले ली है भोग-विलासिता, स्वार्थ, व्यवसायिक मनोवृत्ति, व्यभिचारी बुद्धि और उन सभी बुराइयों ने जिनसे सायास दूरी बनाए

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 3, March 2015

रखने की सीख सदियों से हमें दी जाती रही है। धंधेबाजी मनोवृत्ति सिर्फ काम-धंधों में ही होनी चाहिए लेकिन जब व्यवसायिक प्रवृत्ति का भूत समाज जीवन के तमाम क्षेत्रों में घुसपैठ कर जाता है तब लगता है जैसे हमारे आस-पास और दूर-दूर तक हर कहीं व्यवसाय की भावना हावी है जहाँ चाहे जिस तरह भी हो सके मुनाफे के लक्ष्य को ही सामने रखकर जीवन व्यवहार किया जाता है। और जहाँ मुनाफा होगा, लाभ-हानि से भरी सौदेबाजी होगी, वहाँ न सेवा होती है और न ही परोपकार। आजकल समाज से लेकर क्षेत्र तक में जो कुछ अच्छा-बुरा हो रहा है उसमें सभी जगह व्यवसाय की भावना हावी है और यह इतनी घनीभूत है कि लोगों को जहाँ नज़र दौड़ाएँ वहाँ धंधा ही धंधा नज़र आता है। व्यवसायिक भावनाओं का कहर चारों तरफ़ ऐसा बरप रहा है कि हमारे आस-पास जितनी भीड़ छापी है उनमें बहुसंख्य लोग आदमी न होकर दुकानें ही नज़र आते हैं। कोई छोटी दुकान है कोई बड़ी। कोई ठेला-लारी और गुमटी है, कोई शॉपिंग कॉम्प्लेक्स। जिसे देखो वह सेवा, परोपकार और लोक कल्याण की बातों को भुला चुका है और बस एक ही चिंतन का विषय है और वह है - धंधा। ये चलती फिरती दुकानें दिन-रात उल्टे-सीधे धंधों में रमी हुई हैं। इनके लिए अपना पूरा इलाका और दुनिया एक खुला चरागाह हो चला है जहाँ किसम-किसम के बाड़ों में घुसकर ये लोग अपनी चला रहे हैं और वे सारे काम कर रहे हैं जो धंधेबाजों को करने चाहिए। धंधे की मानसिकता अब हर क्षेत्र में मुँह मारने लगी है। समाज या अपने क्षेत्र का कोई आयाम ऐसा नहीं बचा है जहाँ धंधे के रूप में आदमी ने अपने आपको चलती-फिरती और सौदा करती दुकान के रूप में विकसित और स्थापित न कर लिया हो।

विचार – विमर्श

चारों तरफ़ भौतिकता की अंधी दौड़ और चकाचौंध के मोहजाल में घिरे लोगों के भीतर से मनुष्यता की गंध पूरी तरह गायब हो चुकी है और इसका स्थान ले लिया है दुकानी मानसिकता ने। हर आदमी अपने आपको दुकान के रूप में स्थापित करने लगा है और वह दुकान भी ऐसी कि जहाँ हर तरह की सौदेबाजी संभव है। आदमी के धंधे में न कोई वर्जनाएँ हैं और न ही अनुशासन की किसी प्रकार की सीमाएँ। अपने स्वार्थ और ऐषणाओं की पूत्रित के लिए वह कुछ भी कर गुजरने को स्वतंत्र ही नहीं बल्कि इससे भी कई कदम आगे बढ़कर स्वच्छंद हो चला है। फिर जब चारों तरफ़ स्वच्छन्दों और उन्मुक्त लोगों की भरमार हो तो कौन कहने वाला है। फिर ये लोग भी कहां किसी की सुनने वाले हैं। मदमस्त हाथियों की तरह मद भरे लोगों की भीड़ यहाँ-वहाँ सभी जगहों पर है और इस धंधेबाज भीड़ से परेशान हैं वे लोग जो आदमी की तरह जीना चाहते हैं और दुनिया तथा समाज के लिए कुछ कर गुजरना चाहते हैं। अब समाज में परंपरागत उदारता और सेवा भावना नहीं रही। ज्यों-ज्यों भौतिकता का प्रदूषण बढ़ता चला जा रहा है, त्यों-त्यों उदारता का लोप होता जा रहा है। आज इंसान उस स्थिति में आ गया है जहाँ उसे संस्कारों और सामाजिक सरोकारों के प्रति समर्पण की आवश्यकता है, न कि उस विकास की जहाँ हर तरफ़ सिर्फ़ स्वार्थ और अपने लिए जीने की। शुचिता पूर्ण लक्ष्मी आने पर प्रसन्नता आती है और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावनाएं विस्तार पाती हैं लेकिन जब भौतिकता की चकाचौंध भरी बुनियाद के पीछे भूख, भ्रष्टाचार और भय का ताण्डव होता है तब उदारता समाप्त होकर आपसी खींचतान, छीनाझपटी और कब्जा जमा लेने जैसी बुराइयाँ घर करने लगती हैं और एक दिन पूरा समाज ऐसे बेहूदा लोगों, हरामखोरों और कमीनों से इतना भर उठता है कि सामाजिक परिवर्तन के लिए किसी विचार क्रांति और लोकचेतना का ज्वार उठाने को उद्यत होना पड़ता है। इतिहास हमेशा अपने आपको दोहराता है यह बात हमें भी अच्छी तरह समझ में आ जानी चाहिए। अच्छे मूल्यों वाले व्यक्ति को हमेशा दूसरे लोगों द्वारा देखा जाता है। ऐसा व्यक्ति विश्वसनीय और विश्वसनीय होता है और इस प्रकार उसका हर जगह स्वागत किया जाता है। अच्छे मूल्य हमारे व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन दोनों को सकारात्मक दिशा देने में मदद करते हैं।

माता-पिता का यह कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों में अच्छे संस्कारों का प्रसार करें। हमारे बचपन के दौरान हम जो मूल्य सीखते हैं वह जीवन भर हमारे साथ रहता है। हमारे चरित्र और समग्र व्यक्तित्व को हमारे जीवन के शुरुआती वर्षों के दौरान हम जिस तरह के मूल्यों से प्रेरित करते हैं, उससे काफी हद तक निर्धारित होता है। यदि हम अपने बचपन के दौरान इन मूल्यों को सिखाया जाता है, तो हम जिम्मेदार और ईमानदार वयस्क बनते हैं। इसी तरह, अगर हमें इन विराट मूल्यों का महत्व नहीं सिखाया जाता है, तो हम उन्हें बहुत अधिक ध्यान नहीं देते हैं और बड़े होते हैं।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 3, March 2015

जबकि बच्चों में अच्छे संस्कारों का बहुत महत्व होता है, दुर्भाग्य से इन मूल्यों को सिखाने के लिए बड़ों द्वारा ज्यादा समय नहीं लगाया जाता है। इस प्रतिस्पर्धी दुनिया में, हम मूल्यों को खो रहे हैं क्योंकि बच्चों को अच्छे मूल्यों को सिखाने के बजाय लोग केवल शिक्षाविदों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं और दूसरों को हरा देने के तरीकों की तलाश कर रहे हैं। उन्हें एहसास नहीं होता है कि अगर किसी व्यक्ति के पास अच्छे मूल्य नहीं हैं तो डिग्री का कोई फायदा नहीं है।

यह समय है जब हम सभी को अच्छे मूल्यों के महत्व का एहसास होना चाहिए और आने वाली पीढ़ियों को भी यही सीखने में मदद करनी चाहिए।

परिणाम

मूल्यों का व्यक्ति के लिए अत्यधिक महत्व है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे अपने व्यवहार, स्वभाव और जीवन और अन्य लोगों के प्रति समग्र व्यवहार का निर्धारण करते हैं। हम अपने जीवन में जो निर्णय लेते हैं, वे काफी हद तक हमारे मूल्यों के आधार पर होते हैं। जीवन में हमारे फैसले न केवल हमें बल्कि हमारे परिवार, हमारे संगठन, हमारे समाज के साथ-साथ हमारे राष्ट्र को भी प्रभावित करते हैं।

अच्छे मूल्यों वाले व्यक्ति के आस-पास के सभी लोगों की भलाई को देखते हुए बुद्धिमान निर्णय लेने की संभावना है। दूसरी ओर, एक व्यक्ति जिसके पास मूल्यों की कमी है, वह इसमें विफल हो जाएगा और अपने लिए और उसके आसपास के लोगों के लिए भी एक समस्या पैदा कर सकता है।

कुछ मूल्यों में ईमानदारी, समर्पण, प्रतिबद्धता, आशावाद, शिष्टाचार, धैर्य, करुणा, क्षमा, सहयोग, एकता, आत्म नियंत्रण, सम्मान, प्रेम और देखभाल शामिल हैं। ये सभी मूल्य एक मजबूत चरित्र का निर्माण करते हैं। अच्छे मूल्य व्यक्ति को विनम्र और भरोसेमंद बनाते हैं। चाहे वह नौकरी हो या व्यक्तिगत संबंध, अच्छे मूल्यों वाले व्यक्ति पर सभी की नजर होती है। एक व्यक्ति के मूल्य उसके व्यक्तित्व में परिलक्षित होते हैं।

अच्छे संस्कारों वाला व्यक्ति सकारात्मक सोच का निर्वाह करता है और प्रेम और आनंद फैलाता है। वह दूसरों की जरूरतों के बारे में विचार करता है। अपने जीवन में अच्छा करने के अलावा, ऐसा व्यक्ति अक्सर जब भी वह कर सकता है, दूसरों के उत्थान और मदद करने के लिए देखा जाता है।

ऐसा व्यक्ति खुद पर विश्वास करता है और एकता और टीम वर्क के महत्व को भी समझता है। वह आसानी से अपना आपा नहीं खोता और क्षमा का अभ्यास करता है। वह निश्चित रूप से किसी भी संगठन के लिए एक संपत्ति है। ऐसे परिवारों को बढ़ाने वाले परिवारों को उनके द्वारा किए जाने वाले प्रयासों के लिए सराहना करनी चाहिए। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अलगाव में नहीं रह सकता। एक स्वस्थ वातावरण एक व्यक्ति के उचित विकास और विकास के लिए आवश्यक है और अच्छे मूल्यों के साथ एक व्यक्ति एक स्वस्थ वातावरण बनाने में मदद करता है। तो, मूल रूप से दोनों अन्योन्याश्रित हैं। एक ऐसी जगह जहां व्यक्ति जिम्मेदारी से काम करते हैं, एकजुट रहते हैं, सही रास्ते पर चलते हैं और दृढ़ संकल्प के साथ अपने कार्यों को अंजाम देते हैं। व्यक्ति इस तरह से व्यवहार कर सकते हैं, जब वे अच्छे मूल्यों का पालन करते हैं।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 3, March 2015

इस प्रकार अच्छे मूल्य मानवता के लिए अत्यावश्यक हैं। मनुष्य शांति से रह सकता है और अच्छे ढंग से विकसित हो सकता है जब उसके पास अच्छे मूल्य होंगे। मान एक स्वस्थ सामाजिक वातावरण के निर्माण में मदद करते हैं। वे हमें मानवीय बनाते हैं और समाज को जीने लायक बनाते हैं। इस प्रकार अच्छे मूल्यों का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

इस प्रकार, मूल्यों का अत्यधिक महत्व है। अच्छे मूल्यों वाले लोगों की बड़ी संख्या निश्चित रूप से प्रगति करेगी और जहां लोगों में मूल्यों की कमी है, उनकी तुलना में तेजी से विकास होगा। मूल्य हमें एक व्यक्तिगत स्तर पर पोषण करने में मदद करते हैं और हम अपने चरित्र की ताकत से अपने परिवेश को बेहतर बनाने के लिए आगे बढ़ते हैं। हमारे मूल्य हमें जीवन में सही दिशा और उद्देश्य देने में मदद करते हैं। वे हमें सही और गलत का अहसास कराते हैं जिसके बिना निर्णय लेना बेहद कठिन हो सकता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि मूल्य मनुष्य को मनुष्य बनाते हैं। मूल्यों के बिना एक आदमी किसी जानवर से कम नहीं होगा, जो इस बात के बारे में भटक रहा होगा कि किस रास्ते पर जाना है और कैसे अपने जीवन को संभालना है। मूल्य हमारे बचपन के वर्षों के दौरान हमारे माता-पिता और शिक्षकों से प्राप्त होने वाली अच्छी शिक्षाएं हैं। हमें अच्छे मूल्यों जैसे आत्म नियंत्रण, अनुशासन, निष्ठा, करुणा, समर्पण, कड़ी मेहनत, टीम वर्क, क्षमा, सहानुभूति, सहायकता, निष्ठा, दृढ़ता, स्थिरता, आशावाद, निर्भरता, दक्षता, सम्मान, देशभक्ति, प्रेम सिखाया जाता है।, देखभाल और जिम्मेदारी। मान हमें यह समझने में मदद करते हैं कि हमारे लिए और हमारे आसपास के लोगों के लिए भी क्या सही है। यह हमें जीवन में विभिन्न निर्णय लेने में मदद करता है। इस प्रकार मूल्यों का अत्यधिक महत्व है। हमारा व्यक्तित्व और चरित्र हमारे द्वारा बनाए गए मूल्यों के आधार पर बनाया गया है। एक व्यक्ति आमतौर पर अपने परिवार के सदस्यों, शिक्षकों और अन्य लोगों से मूल्यों को चुनता है जो वह अपने बचपन के दौरान घिरा हुआ है। माता-पिता और शिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे बच्चों को अच्छे संस्कार दें ताकि वे अपने आसपास के लोगों को मानवीय और संवेदनशील बना सकें।

हमें इनका अनुकरण करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है क्योंकि ये हमारे जीवन को सही दिशा में ले जाने में मदद करते हैं। अच्छे मूल्य एक मजबूत चरित्र के निर्माण में मदद करते हैं। हमारे मूल्य हमें समाज में दूसरों की जरूरतों के प्रति संवेदनशील बनाते हैं और हमें अपने लिए सही निर्णय लेने में भी मदद करते हैं। वे ज्ञान के साथ-साथ चरित्र की ताकत भी प्रदान करते हैं और इस तरह हमें मानव बनाते हैं।

संदर्भ

- 1) "The ICN Code of Ethics for Nurses" (PDF). International Council of Nurses. 2006. मूल से 17 जनवरी 2009 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 2009-06-27.
- 2) Tschudin, Verena (2003). Ethics in Nursing: the caring relationship (3rd संस्करण). Edinburgh: Butterworth-Heinemann. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 9780750652650.
- 3) सन्दर्भ त्रुटि: का गलत प्रयोग; Rumbold 1999 नाम के संदर्भ में जानकारी नहीं है।
- 4) Tuckett, Anthony (2004). "Truth-Telling in Clinical Practice and the Arguments for and Against: a review of the literature". Nursing Ethics. SAGE Publications. 11 (5): 500–513. PMID 15362359. डीओआइ:10.1191/0969733004ne728oa. मूल से 9 जनवरी 2010 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 नवंबर 2010.
- 5) सन्दर्भ त्रुटि: <ref> का गलत प्रयोग; RCN नाम के संदर्भ में जानकारी नहीं है।2001
- 6) नर्सिंग आचार के लिए इंटरनेशनल सेंटर, Surrey, ब्रिटेन के विश्वविद्यालय Archived 2008-12-10 at the Wayback Machine 2001



ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 3, March 2015

- 7) नर्सों और मानवाधिकार एमनेस्टी इंटरनेशनल से-2005
- 8) देश द्वारा नैतिकता के कोड के लिए लिंक-2007
- 9) नर्सिंग आचार पत्रिका-2010
- 10) NursingEthics.ca (नर्सिंग नैतिकता संसाधन)-2001